

CSIR IN MEDIA



CSIR

NEWS BULLETIN
16 TO 20 DECEMBER 2020



भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव: जयपुर पड़ाव पर संबोधन आधुनिक शिक्षा-विज्ञान के भरोसे नहीं बन सकते जगत गुरु: कोठारी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

जयपुर. राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी ने आधुनिक शिक्षा नीति और विज्ञान पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि इनके भरोसे देश विश्व को नेतृत्व देने वाला नहीं बन सकता है। हम अपनी भाषा में शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं, तो कैसे आत्मनिर्भर बनेंगे। आज विज्ञान एक बीमारी का इलाज कर दूसरी बीमारी को जन्म दे रहा है, लेकिन वेद और आयुर्वेद ने लोगों को स्वस्थ रखा है। स्कूल में ही आयुर्वेद को सिखाया जाए, तो चिकित्सा विभाग की जरूरत ही नहीं रहेगी।

कोठारी ने भारतीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव के तहत शनिवार को विज्ञान यात्रा के जयपुर में पड़ाव पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जिस ज्ञान-विज्ञान के सहारे देश को जगत गुरु कहा जाता था, उसको नए परिवेश में नए वेश में लौटना होगा। क्या कारण रहे कि अथाह ज्ञान सम्पदा होते हुए भी हम विश्व को नेतृत्व नहीं दे पा रहे हैं। इस पर चिंतन करना होगा।

शिक्षा हमें स्वयं से दूर ले जा रही है

उन्होंने कहा कि आज विकास के नाम पर सब उलट गया है। उच्च शिक्षा के नाम पर आत्मा कॉलेज में ही छूट जाती है। तब आत्मनिर्भर कैसे होंगे? आज का शिक्षित तकनीक के भरोसे अकेला जीना चाहता है। मोबाइल पर 5 जी व एआई तकनीक आने वाली है, जिससे इंसान रोबोट बनकर रह जाएगा। शिक्षा से भारत लुप्त है। हर देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा देता है और अपनी



वैशाखियों के सहारे कैसे बनेंगे आत्मनिर्भर

प्रधान संपादक कोठारी ने कहा कि क्या हम वैशाखियों के सहारे आत्मनिर्भर हो सकेंगे? यदि आत्मनिर्भर नहीं हुए तो कैसे विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर पाएंगे? जब आधुनिक विज्ञान पैदा भी नहीं हुआ था, कृष्ण ने गीता में विज्ञान का स्पष्ट उद्घोष किया था। अब भी समय है, हम वैदिक-पौराणिक-

औपनिषदिक ज्ञान को शिक्षा नीति का आधार बनाएं। पेट भरने के लिए 20 साल तक शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। आत्मनिर्भरता का प्रश्न ही खो गया है। सारा वातावरण बेरोजगारी से गूँज रहा है। स्थिति यह आ गई है कि चाहें तो वेद की शरण में चले जाएं और चाहें तो प्रलय की प्रतीक्षा करें।

कोरोना ने पोल खोली

कोरोना महामारी ने छोटी सी अवधि में समझा दिया, आधुनिक विज्ञान ने मानवता को कितना मारा। कोरोना वायरस स्वयं ही विज्ञान की देन है। **8 माह में हमने ताकत दिखाई:** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सचिव प्रो. आशुतोष

शर्मा ने कहा कि कोरोनाकाल के 8 माह में हमने दिखा दिया कि हम कैसे आत्मनिर्भर बन सकते हैं, चुनौतियां हमको रोक नहीं सकती है। आत्मनिर्भरता का संस्कृति से भी नाता है, यह पाठ्यपुस्तक का विषय नहीं है।

संस्कृति पर गर्व करता है, लेकिन हमारी शिक्षा स्वयं से भी दूर ले जाती है। हम संस्कृत को देवभाषा कहते हैं, किन्तु उस पर विश्वास कहाँ है?

ऐसे तो विश्व को भ्रमित ही करेंगे

उन्होंने कहा कि जो ज्ञान हजारों वर्ष पहले ऋषियों ने दिया था, आज का विज्ञान वहां तक भी नहीं पहुंचा है।

आज तो विज्ञान भी जीन्स और पुनर्जन्म पर काम कर रहा है। शोध के अभाव में न पीढ़ी को और न ही विश्व को आश्वस्त कर पा रहे हैं। आधुनिक विज्ञान बाह्य जीवन और शरीर की सुविधाओं पर आधारित है, जबकि वेद शरीर को नश्वर कहता है।

सवाल यह है कि जिस ज्ञान पर हमारी सरकारें और शिक्षा नीतियों को विश्वास नहीं है, उस ज्ञान की चर्चा करना तो विश्व को भ्रमित करना ही होगा।

Published in:

Rajasthan Patrika



New Farm Laws Brought By PM Modi Has All Ingredients To Make India Self Reliant: Prof Pasupalak

By PragativadiNews 1 — On Dec 19, 2020 — 24

Bhubaneswar: The Press Information Bureau (PIB) Bhubaneswar has organised a webinar on the theme “Science and Atmanirbhar Bharat” on Saturday. The webinar was organised ahead of the mega India International Science Festival (IISF) 2020, which will be held virtually between December 22 and 25 in New Delhi.

The webinar was attended by Shri SK Malviya, Additional Director General, PIB Bhubaneswar, Prof Suddhasatwa Basu, Director, CSIR-Institute of Minerals and Materials Technology (CSIR-IMMT) Bhubaneswar, Prof Surendranath Pasupalak, Chairman, SAC ICAR-Patna, former Vice Chancellor of OUAT Bhubaneswar and Dr Sarat Chandra Sahu, Director Department of Civil Engineering, ITER, SoA Deemed to be University and former Director of Regional Meteorological Centre Bhubaneswar.

Beginning the webinar, Shri Malviya said that the theme of the webinar, “Science and Aatmanirbhar Bharat” is apt for the moment as the country is marching ahead to become self-reliant. “The comfort we are having today is simply because of science. Science and technology has contributed a lot to make India Atmanirbhar,” said Shri Malviya.

Addressing in the webinar, Prof Suddhasatwa Basu highlighted the research and development work going on at CSIR-IMMT Bhubaneswar and also talked about both essential and critical minerals and materials. He said that research is going on to lessen the import of different kinds of essential and critical minerals. He also informed that their institute has created an incubation centre to provide hands-on training to the homegrown startups and promote entrepreneurship.

Talking about critical materials, Prof Basu said that as the country is slowly moving to adopt the e-vehicle system in the coming years, India will be in need of a great amount of lithium and cobalt to make batteries. “Currently we import the raw materials for making the batteries from Australia or Central America. The cost of the batteries go up due to the import practice. We are working on developing a technology to produce batteries in the country itself,” Prof Basu said.

Talking about the role of science in the development of agriculture, Prof Surendranath Pasupalak said that the journey of Aatmanirbhar Krishi began in the late 70s and by the 80s, the country had started to become self-reliant in agriculture. “Constant use of science and technology has made agriculture self-reliant now,” Prof Pasupalak said.

He said that scientists across different research institutes are now issuing farmers bulletin and weather forecasts, which have helped farmers to get ready for any unprecedented situation. “Agricultural scientists contribute a lot from production of the goods to its storage to its supply. The new farm laws brought by Prime Minister Shri Narendra Modiji has all the ingredients in itself to make use of science in agriculture and make India self-reliant,” Prof Pasupalak said.

Dr Sarat Chandra Sahu highlighted the growing involvement of science and technology in the meteorology that has helped mitigate natural disasters. “There was a time when we were depending on manual systems, but thanks to scientific evolution, we are now being able to make an early forecast of natural disasters. We can't prevent the calamities, but with the help of science and technology, we will be able to prepare for it,” Dr Sahu said.

Stressing on the need to change lifestyle, Dr Sahu said that the calamities are happening because of environmental change. “Science and technology will be available to help. It will further improve in the coming time, but the people need to bring a change in their lifestyle. Instead of personal vehicles, we can use public transport. We need to lessen our electric consumption too,” Dr Sahu opined.

The webinar was ended with the concluding remarks of Shri Malviya. It was conducted by Pradeep Kumar Choudhry, Media and Communication Officer, PIB Bhubaneswar.

Published in:
Pragativadi

ଆତ୍ମନିର୍ଭର ଭାରତ ଶୀର୍ଷକ ଓଡ଼ିଆ ଦୈନିକ



ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ:(ପିଆଇବି): ଭାରତୀୟ ମୋଡରେ ହେବାକୁଥିବା ଭାରତ ଆନ୍ତର୍ଜାତିକ ବିଜ୍ଞାନ ମହୋତ୍ସବ(ଆଇଆଇଏସଏଫ) ୨୦୨୦ ଅବସରରେ ପୂର୍ବରୁ ଏହି ଓଡ଼ିଆଦୈନିକ ଆୟୋଜିତ ହୋଇଥିଲା । ଆତ୍ମନିର୍ଭର ଭାରତ ଗଠନରେ ବିଜ୍ଞାନ ଓ ବୈଜ୍ଞାନିକଙ୍କ ଭୂମିକା ଅନୁସନ୍ଧାନ ବୋଲି ବକ୍ତାମାନେ ମତବ୍ୟକ୍ତକରିଛନ୍ତି । ଏଥିରେ ଯୋଗଦେଇ ଭୁବନେଶ୍ୱରସ୍ଥିତ ବିଜ୍ଞାନ ଓ ଶିକ୍ଷା ଗବେଷଣାପରିଷଦ (ସିଏସଆଇଆର) ଓ ଖଣିଜ ଓ ଖଣିଜ ଦ୍ରବ୍ୟ ପ୍ରଯୁକ୍ତିପ୍ରତିଷ୍ଠାନ ଆତ୍ମନିର୍ଭର ହେବା ସହ ଖଣିଜ ପଦାର୍ଥ ଉପଯୋଗରବୈଷୟିକ ଉନ୍ନତ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ ବୋଲି କହିଛନ୍ତି ।

ଖଣିଜପଦାର୍ଥରୁ ଉତ୍ପାଦିତ ସାମଗ୍ରୀ ଦେଶର ଭିତ୍ତିଭୂମି ବିକାଶରେଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରେ । ମାତ୍ର ଏଥିପାଇଁ ଆମଦାନୀଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ ନହୋଇ ଆତ୍ମନିର୍ଭରଶୀଳ ହୋଇ ଧାର୍ଯ୍ୟ ଲକ୍ଷପୂରଣ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ । ଉଦାହରଣ ସ୍ୱରୂପ ଆମେ ମୂର୍ତ୍ତିକାରେ ସ୍ୱାବଲମ୍ବୀ ହେଲେ ଆମକୁ ଆମଦାନୀ ପାଇଁ ଚୀନଉପରେ ନିର୍ଭର କରିବାକୁ ପଡିବ ନାହିଁ । ଏହାଛଡା ଖଣିଜ ପଦାର୍ଥରୁ ସଂଗୃହୀତ କଂଚାମାଲ ପର୍ଯ୍ୟାପ୍ତ ଉପଲବ୍ଧ ହେଲେ ଅଣ୍ଟା, କ୍ଷୁଦ୍ର ଓମଧ୍ୟମ ଶିକ୍ଷର ଅଭିବୃଦ୍ଧି ସହ ପର୍ଯ୍ୟାପ୍ତ ନିଯୁକ୍ତି ସୁଯୋଗ ମଧ୍ୟ ସୃଷ୍ଟିହେବ ବୋଲି ସେ କହିଛନ୍ତି । ଏଥିରେ ଯୋଗଦେଇ ଓଡ଼ିଶା କୃଷି ଓ ବୈଷୟିକ ବିଶ୍ୱ

ବିଦ୍ୟାଳୟରପୂର୍ବତନ କୁଳପତି ପ୍ରଫେସର ସୁରେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପଣ୍ଡାପାଳକ କହିଛନ୍ତିଯେ, ଧାନ ଓ ଗହମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଦେଶ ଆମର ଆତ୍ମନିର୍ଭରଶୀଳହୋଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଏହାର ଗୁଣାତ୍ମକ ବିକାଶ ହେଲେ ଆମେ ନିଜରଗୁଣଗୁଣ ମେଂଟାଲବା ସହ ବଳକା ଶସ୍ୟ ବାହାରକୁ ରପ୍ତାନୀକରିପାରିବା । ତାଲି ଓ ତେଲବାଜ ଜାତୀୟ ଶସ୍ୟ ଉତ୍ପାଦନ ଆମକୁ “ବୃଦ୍ଧି କରିବାକୁ ହେବ । ଋଷୀଙ୍କ ସଚେତନତା ସହ ବୈଜ୍ଞାନିକପରାମର୍ଶ ଓ ଉତ୍ତାପକ ନୂତନ କୃଷି ଯନ୍ତ୍ରପାତି ଉତ୍ପାଦନ ବୃଦ୍ଧିରେବିଶେଷ ସହାୟକ ହେବ । ନିକଟରେ ଘୋଷିତ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କକୃଷି ନୀତିଆତ୍ମନିର୍ଭର କରିବାରେ ଯଥେଷ୍ଟ ସହାୟକହେବ

ବୋଲି ସେ କହିଛନ୍ତି । ଏଥିରେ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ଭୁବନେଶ୍ୱର ପାଣିପାଗ କେନ୍ଦ୍ରର ପୂର୍ବତନନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ତତ୍କୁର ଶରତ ଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ ପାଣିପାଗ ବିଜ୍ଞାନର ଅଗ୍ରଗତିଯୋଗୁଁ ଆଜି ବିପର୍ଯ୍ୟୟ ପ୍ରଶମନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅନେକ ସୁଧାର ଆସିଛିବୋଲି କହିଛନ୍ତି । ସଠିକ ଆକଳନ ଯୋଗୁଁ ବିପର୍ଯ୍ୟୟ କବଳରୁପର୍ତ୍ତାପେଡ଼ା ଅନେକ ଧନ ଜୀବନ ହାନୀ ରୋକାଯାଇପାରିଛି । ପତ୍ରସୂଚନା କାର୍ଯ୍ୟାଳୟର ଅତିରିକ୍ତ ମହାନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଶ୍ରୀ ଶୈଳେଶକୁମାର ମାଲବ୍ୟ ଏଥିରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା କରିଥିବାବେଳେ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରଗଣମାଧ୍ୟମ ଯୋଗାଯୋଗ ଅଧିକାରୀ ତତ୍କୁର ପ୍ରଦୀପ କୁମାରଚୌଧୁରୀ ଓଡ଼ିଆଦୈନିକ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ ।

5 days skill development training programme Date : 4th to 8th Jan 2021 - CSIR-Central Food Technological Research Institute, Mysore

CSIR-CFTRI

20th December, 2020

CSIR-Central Food Technological Research Institute, Mysore is organising a skill development training programme in food processing at Imphal. The training programme is sponsored by the Agricultural & Processed Food Products Export Development Authority (APEDA), Govt. of India. A brief information of the training programme is as follows:

Title of the training programme:

Value Additions to Fruits, Vegetables, and Spices

Duration and Dates: 5 days (4th to 8th Jan. 2021)

Venue: Institute of Cooperative Management Imphal (ICM) Cooperative Complex Lamphelpat Imphal 795004 Opposite to Department of Commerce and Industries

Targeted participants: Entrepreneurs, farmers, students, SHGs, NGOs, etc. who are interested in food processing as a business. Preference will be given to those who are registered under APEDA and those already in the food processing fields.

Teaching Faculty: A team of CSIR-CFTRI scientists from Mysore will conduct the theory, practical and demonstration of value added products from the locally grown raw materials.

No. of seats: 30-32 Mode of selection: Participants from Manipur will be selected through application and virtual interview.

Registration/ Training Fee: Free of cost

Training certificate: Course completion certificate will be given to the training participants

Food: Session tea and session lunch will be provided during the course

Lodging & Transport : Those participants who come from far places will be provided

Interested applicants may kindly fill up the following form and send to the given email:

iboyaima(AT)cftri(DOT)res(DOT)in or

ngibo(AT)yahoo(DOT)com or

WhatsApp: 9845704011

Dr. Ng. Iboyaima Singh

Chief Scientist

CSIR-CFTRI, Mysore 570020

Published in:

Epao.net

Cyclical Management of Municipal Solid Waste for a Clean and Green India

Kolkata: CSIR-CMERI, Durgapur, in association with MSME-DI, Aizawl, Mizoram, jointly organised a Webinar on 'Sustainable Processing of Municipal Solid Waste' on December 18th, 2020. Prof. (Dr.) Harish Hirani, Director, CSIR-CMERI, Durgapur delivered the Keynote Lecture on the topic.

R.K. Giri, Director, MSME-DI, Agartala, Got of India in his welcome address stated, "CSIR-CMERI has been the flag bearer of numerous Affordable Technology Innovations which has played a critical role in ameliorating social concerns. The Municipal Solid Waste Processing Technology has tremendous potential to make a substantial impact for the immediate Ecology and the Environment. The MSMEs can harness this Technology in conjunction with the various Government Schemes to explore the massive business potential. The North-East Industrial Development Scheme launched in the year 2017 can be gainfully utilized for Business Opportunities as well as Maximum Societal Impact."

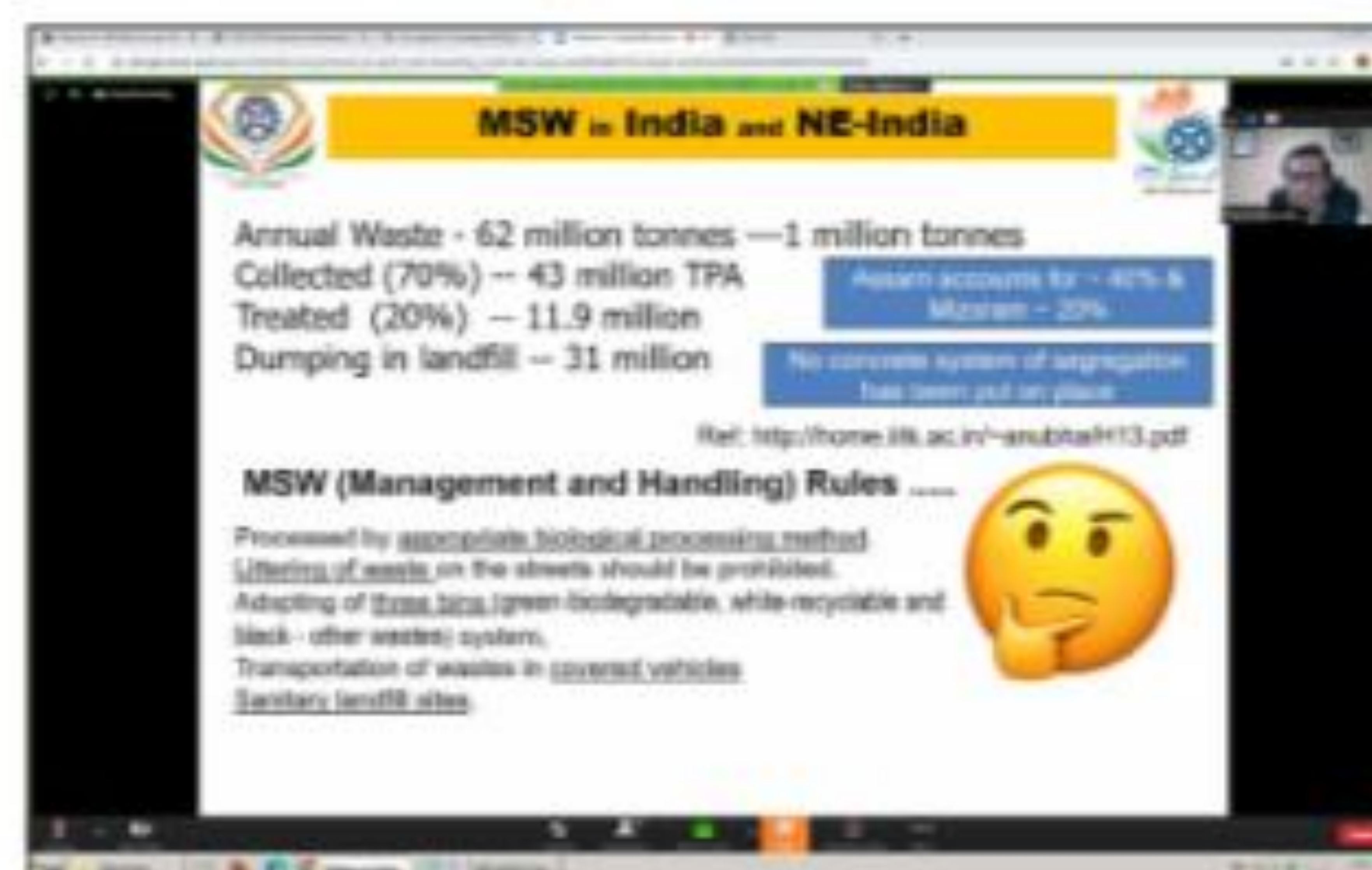
Prof. (Dr.) Harish Hirani, Director, CSIR-CMERI, Durgapur stated "The Government Schemes and Science & Technology in combination can maximize the Business Prospects as well as the Societal Outreach of the Municipal Solid Waste Processing Technology developed by CSIR-CMERI. It has been observed that

with an Annual Average Waste generation of 62 million tonnes in India, approximately 70% of the waste is collected and 20% is processed. Appropriate technological interventions for processing of the Waste is a necessity without which there are high risks of contaminating the Ground Water as well as Soil through the process of leaching. Besides, improper management of Drainage Systems also leads to flooding, ow-

at mechanized segregation of waste following complete bio-degradation of organic waste targeting 10-30% of MSW to be dumped in landfill area. The existing solution of Windrow Composting is Economically Unsustainable. CSIR-CMERI can also add modules in existing waste management plants to make the solution full-proof targeting in zero landfill area. The waste heat from the plastic waste management facility

ods. We have also achieved optimum Energy Sufficiency in the MSW facility by adding the Solar Rooftop technology, which can also feed the surplus Energy Supply onto a Mini-Grid.

Prof. (Dr.) Harish Hirani, further added, "It has been observed that after a certain period the Waste Processing Machineries are defunct, owing to non-availability of Skilled Manpower. Thus, CSIR-CMERI has initiated 5 variable week-long modules, for Skilling and Up skilling the local people on operations and maintenance of the MSW Technology. Besides, a Community Participation Model can be developed whereby the Garbage Creators themselves may submit the generated garbage to waste processing hubs, by providing them with appropriate incentives. The MSW pilot plant installed at CSIR-CMERI has the capacity to process approximately 1 tonne/day, which is sufficient to take care of around 1000 households. The Landfills vacated as a consequence of the MSW Technology may thereafter be utilized for gainful purposes. This technology also provides a viable Business Model which is directly proportional to the Landfill Area intended to be vacated. This decentralised technology will help in drastic reductions of Transportation and Logistics Cost and consequently substantial reduction in Carbon Footprint".



ing to dumping of these Solid Wastes directly onto the Drains. Various Solid Waste Management solutions including capital intensive to cost effective are available with CSIR-CMERI. The plasma arc treatment of waste management is useful for treatment of all forms of waste and is capable of volume reduction of waste to the extent of 95% but the process is capital as well as energy intensive. Contrary to the above solution, the cost-effective one is aimed

is used for drying and disinfection of bio-solids collected from sewage water which is a good nutrient with higher fertilisation capability. The MSW facility is also equipped with special capabilities to deal with a diverse range of COVID-19 waste including Masks, Sanitary Napkins, and Diapers etc. The MSW facility has been with special disinfection capabilities to help Break the COVID Chain through UV-C Lights and Hot-Air Convection meth-

CSIR-CSMCRI

20th December, 2020

ભારત આંતરરાષ્ટ્રીય વિજ્ઞાન મહોત્સવ-૨૦૨૦ને પ્રોત્સાહિત કરવા માટે સેન્ટ્રલ સોલ્ટના વિદ્યાર્થીઓની પહેલ

ભાવનગર તા. ૧૯
તા. ૧૯/૧૨/૨૦૨૦ ના રોજ ભાવનગર સ્થિત રાષ્ટ્રીય સ્તરની વૈજ્ઞાનિક સંસ્થા એવી સેન્ટ્રલ સોલ્ટ એન્ડ મરીન કેમિકલ્સ રિસર્ચ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ દ્વારા “ભારત આંતરરાષ્ટ્રીય વિજ્ઞાન મહોત્સવ (IISF)” અંતર્ગત વિદ્યાર્થીઓને પ્રોત્સાહન આપવા અને ઉત્સાહ પૂર્વક ભાગ લેવા માટે “પ્રી-ઈવેન્ટ IISF ૨૦૨૦ વિદ્યાર્થી સમ્મેલન” નું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં વિવિધ પ્રવૃત્તિઓના ભાગરૂપે ગુજરાતની વિવિધ વિદ્યાલયો તેમજ વિશ્વવિદ્યાલયોના વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા વ્યાખ્યાન પ્રસ્તુતિ રજૂ કરવામાં આવી હતી, તેમજ જ્ઞાન સાથે ગમ્મતના ભાગરૂપે સાઈન્સ ક્વિઝ તેમજ ચિત્ર આધારિત સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું જેમાં મોટી સંખ્યામાં વિદ્યાર્થીઓએ રસપૂર્વક ભાગ લીધો હતો, કાર્યક્રમના અંતે વિવિધ સ્પર્ધાઓ ના વિજેતાઓ ઘોષિત કરવામાં આવ્યા હતા તેમજ દરેક ભાગ લેનાર વિદ્યાર્થીમિત્રોને અને સ્પર્ધામાં પ્રથમ, દ્વિતીય અને તૃતીય



સ્થાન પ્રાપ્ત કરનાર વિદ્યાર્થીને પ્રોત્સાહનના ભાગરૂપે ડિજિટલ પ્રમાણપત્ર પણ આપવામાં આવ્યું હતું. આ સંપૂર્ણ કાર્યક્રમનું જીવંત પ્રસારણ એમ એસ ટીમ્સ તેમજ યુટ્યુબ પર કરવામાં આવ્યું હતું. સેન્ટ્રલ સોલ્ટ એન્ડ મરીન કેમિકલ્સ રિસર્ચ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ સંસ્થાના ડાઈરેક્ટર કનન શ્રીનિવાસન દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને ભારત આંતરરાષ્ટ્રીય વિજ્ઞાન મહોત્સવનો ઉદ્દેશ શું છે તથા IISF-૨૦૨૦ની

થીમ “આત્મનિર્ભર ભારત અને વૈશ્વિક કલ્યાણ માટેનું વિજ્ઞાન” વિશે જાણકારી આપવામાં આવી હતી તેમજ વિજ્ઞાનનું મહત્વ સમજાવવાની સાથે સાથે આવનારી યુવા પેઢીને વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજી સાથે વધુમાં વધુ જોડાવા માટેનો અનુરોધ પણ કર્યો હતો. અત્રે ઉલ્લેખનીય છે કે આગામી તારીખ ૨૨ થી ૨૫ ડિસેમ્બર ૨૦૨૦ દરમિયાન વિડીયો કોન્ફરન્સ ના માધ્યમથી મિનિસ્ટ્રી ઓફ સાઈન્સ એન્ડ ટેકનોલોજી તેમજ મિનિસ્ટ્રી ઓફ અર્થ સાઈન્સએ વિજ્ઞાન ભારતી(વિભા)ના સહયોગથી એક અનોખું મંચ બનાવ્યું છે “ભારત આંતરરાષ્ટ્રીય વિજ્ઞાન મહોત્સવ(IISF)” જે જિજ્ઞાસુઓ માટે પ્રેરણાદાયી તેમજ લાભદાયી બનશે. વિજ્ઞાન ક્ષેત્રે રસ ધરાવતા લોકો ભાગ લઈ શકે છે વિજ્ઞાન ક્ષેત્રે રસ ધરાવતા લોકો ભાગ લઈ શકે છે <https://scienceindiafest.org/register> આ મહોત્સવનો ઉદ્દેશ ભારતની સિદ્ધિઓ ની ઉજવણી અને સંશોધન ક્ષેત્રે ભારતને આત્મનિર્ભર બનાવવા ની પહેલ છે.

Published in:

Lok Samachar

મંગળવારથી સાયન્સ ફેસ્ટિવલ અંતર્ગત વિવિધ કાર્યક્રમો ગૂગલ મેપની સફળતા પાછળ ગણિતનું નોંધપાત્ર યોગદાન

■ સાયન્સ ફેસ્ટિવલની પ્રી - ઇવેન્ટમાં સોલ્ટ
અને CSIR નાં ડાયરેક્ટર નાં લેક્ચર

ભાવનગર | 18 ડિસેમ્બર

ભાવનગરમાં વિજ્ઞાન ગુર્જરી, સી.એસ. આઈ.આર.- સેન્ટ્રલ સોલ્ટ, પ્રેસ ઇન્ફોર્મેશન બ્યુરો, રિજનલ ઓઉટરીય બ્યુરો દ્વારા છઠ્ઠો ઈન્ડિયા-ઇન્ટરનેશનલ સાયન્સ ફેસ્ટિવલ અંતર્ગત તારીખ 18 ડિસેમ્બર 2020 ના રોજ સંસ્થા ખાતે વિડીયો કોન્ફરન્સના માધ્યમથી પ્રી - ઇવેન્ટ કરવામાં આવ્યા હતા. ડો. કન્નન શ્રીનિવાસન (નિર્દેશક, સેન્ટ્રલ સોલ્ટ) એ ઈન્ડિયા-ઇન્ટરનેશનલ સાયન્સ ફેસ્ટિવલ નું મહત્વ, દેશ માં આત્મનિર્ભરતા ની જરૂરિયાત વિષે વાત કરી.

ડો. સોમક રાયચૌધરી (નિર્દેશક IUCAA) એ IUCAA ના નિર્માણ વિષે જણાવ્યું અને ખગોળશાસ્ત્રીય વિજ્ઞાન ના નોબેલ પ્રાઈઝ ની પણ વાત કરી. માં નિર્માણ થતા 30 મીટર ના ટેલિસ્કોપ વિષે પણ જણાવ્યું અને ખગોળશાસ્ત્ર

માં ના રિસર્ચ ની ઉત્તેજના વિષે જણાવ્યું. પ્રો. ગદાધર મિશ્રા (ડિપાર્ટમેન્ટ ઓફ મેથેમેટિક્સ , IISc) એ બધી વસ્તુઓ પાછળ ના ગણિત પર વાત કરતા કહ્યું કે વિશ્વપ્રસિદ્ધ સર્ચ એન્જિન ગૂગલ પાછળ ઘણું બધું ગણિત છુપાયેલ છે જે આપણને દેખાતું નથી. આગળ જણાવતા તેમણે ગૂગલ નો તથા ગૂગલ મેપ્સ ના સર્ચ અલ્ગોરિથમ ની વાત કરી. ટ્યુમર ની સારવાર માટે પણ આકાર ગણિત ખુબજ મદદરૂપ છે. તા. 22-25 ડિસેમ્બર ના રોજ યોજનારા આગામી કાર્યક્રમ યોજનાર છે જે કાર્યક્રમ નો બીજો પડાવ હશે. આ ઉપરાંત CSIR-CSMCRI ના વિજ્ઞાનીઓ એ ગુજરાતી, હિન્દી અને અંગ્રેજી માધ્યમ થી વક્તવ્ય આપ્યા તથા વિદ્યાર્થીઓ ને પોટાશ, સિવિડ સેપ અને સોલ્ટ જેવા વિવિધ વિષયો થી માહિતગાર કર્યા. પ્રી - ઇવેન્ટમાં આજે ચાલો વિજ્ઞાન નું સપનું જોઈએ વિષય પર કાર્યક્રમ યોજાશે. જેમાં સવારે 10.30 કલાકે સાયન્સ લેક્ચર અને સાયન્સ ગેમ યોજાશે. આ સેશન માં પોતાના આઈડિયા પણ ashokpanda@csmcricri.org પર મેઈલ કરી શકાશે.

Published in:

Saurashtra Samachar

পরিষ্কার ও সচ্ছ ভারতের জন্য পৌর সলিড বর্জ্যের পরিচালনা

কলকাতা, ১৮ ডিসেম্বর: সিএসআইআর-সিএমইআরআই, দুর্গাপুর, এমএসএমই-ডিআই, আইজল, মিজোরামের যৌথ উদ্যোগে ২০২০ সালের ২০ শে ডিসেম্বর পৌরসভার সলিড বর্জ্যের টেকসই প্রক্রিয়াজাতকরণ সম্পর্কিত একটি ওয়েবিনারের আয়োজন করে। অধ্যাপক (ডা) হরিশ হিরানী, পরিচালক, সিএসআইআর-সিএমইআরআই, দুর্গাপুর এই বিষয়টিতে মূল বক্তৃতা দিয়েছেন। আর.কে. গিরি, পরিচালক, এমএসএমই-ডিআই, আগরতলা, গোটাওফ ভারত তার স্বাগত বক্তব্যে বলেছিলেন, “সিএসআইআর-সিএমইআরআই বহু সংখ্যক সাশ্রয়ী মূল্যের প্রযুক্তি উদ্ভাবনের পতাকাবাহক যা সামাজিক উদ্বেগকে প্রশমিত করতে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করেছে। মিউনিসিপালি সলিড বর্জ্য প্রক্রিয়াজাতকরণ প্রযুক্তির তাত্ক্ষণিক বাস্তবায়ন এবং পরিবেশের জন্য যথেষ্ট প্রভাব

ফেলতে অসাধারণ সম্ভাবনা রয়েছে। এমএসএমইআর বিভিন্ন ব্যবসায়িক সম্ভাবনার অন্বেষণ করতে বিভিন্ন সরকারী প্রকল্পের সাথে একযোগে এই প্রযুক্তিটি ব্যবহার করতে পারে। ২০১৭ সালে প্রবর্তিত উত্তর-পূর্ব শিল্প উন্নয়ন প্রকল্পটি ব্যবসায়ের সুযোগের পাশাপাশি সর্বাধিক সামাজিক প্রভাবের জন্য কার্যকরভাবে ব্যবহার করা যেতে পারে অধ্যাপক ড.হরিশ হিরানী, পরিচালক, সিএসআইআর-সিএমইআরআই, দুর্গাপুর বলেছেন, সরকারী প্রকল্প এবং বিজ্ঞান ও প্রযুক্তি সমন্বিতভাবে ব্যবসায়িক সম্ভাবনা এবং সিএসআইআর-সিএমইআরআই দ্বারা নির্মিত পৌর সলিড বর্জ্য প্রক্রিয়াজাতকরণ প্রযুক্তির সামাজিক প্রচারকে সর্বাধিকতর করতে পারে। দেখা গেছে যে বার্ষিক গড় বর্জ্য ভারতে ৬২ মিলিয়ন টন জঞ্জাল জেনারেশন ছাড়াও ড্রেনেজ সিস্টেমগুলির অনুপযুক্ত পরিচালনাও বন্যার



দিকে পরিচালিত করে, যার ফলে এই সলিড বর্জ্যগুলি সরাসরি ড্রেনে ফেলে দেওয়া হয়। বিভিন্ন এস সিএসআইআর-সিএমইআরআই বিদ্যমান বর্জ্য ব্যবস্থাপনা কেন্দ্রগুলিতে শূন্য স্থলভাগের সমাধানটিকে ফুল-প্রুফ লক্ষ্যবস্তু করার লক্ষ্যে মডিউল যুক্ত করতে পারে। প্লাস্টিকের বর্জ্য ব্যবস্থাপনার সুবিধাযুক্ত বর্জ্য তাপটি নিকাশীর জলে সংগ্রহ করা

বায়ো-সলিডগুলি শুকানোর এবং জীবাণুমুক্ত করার জন্য ব্যবহৃত হয় যা উচ্চতর নিষিক্তকরণের ক্ষমতা সহ একটি ভাল পুষ্টি উপাদান। মাস্কস, স্যানিটারি ন্যাপকিনস এবং ডায়াপারস সহ বিভিন্ন বিস্তৃত কোভিড -১৯ বর্জ্য মোকাবেলার জন্য এমএসডাব্লু সুবিধাটিও বিশেষ ক্ষমতা সম্পন্ন, এমভিডাব্লু সুবিধাটি ইউভি-সি লাইটসের মাধ্যমে কোভিড চেইনটি ভাঙতে সহায়তা

করার জন্য বিশেষ নিবীজন ক্ষমতা সহ ছিল এবং হট-এয়ার পরিবহন পদ্ধতি। আমরা সৌর ছাদ প্রযুক্তি যুক্ত করে এমএসডাব্লু সুবিধাটিতে সর্বোত্তম শক্তি সাফল্যও অর্জন করেছি, যা একটি মিনি-গ্রিডে উদ্ভূত শক্তি সরবরাহ করতে পারে।” অধ্যাপক ড.হরিশ হিরানী আরও যোগ করেছেন, “লক্ষ্য করা গেছে যে একটি নির্দিষ্ট সময়ের পরে বর্জ্য প্রক্রিয়াজাতকরণের মেশিনারিগুলি দক্ষ লোকবলের অভাবের কারণে অপসারণযোগ্য। এমএসডাব্লু টেকনোলজির পরিচালনা ও রক্ষণাবেক্ষণের জন্য স্থানীয় মানুষকে দক্ষতা ও দক্ষতার জন্য সিএসআইআর-সিএমইআরআই পাঁচটি পরিবর্তনশীল সপ্তাহব্যাপী মডিউল চালু করেছে। এছাড়াও, একটি সম্প্রদায়ের অংশীদারিত্ব মডেল তৈরি করা যেতে পারে যার মাধ্যমে আবর্জনা নির্মাতারা নিজেরাই উত্পাদিত আবর্জনা প্রসেসিং হাবগুলিতে জমা দিতে পারে।

Clevergene inks MoU with CFTRI for SARS-CoV-2 genome sequencing

CSIR-CFTRI

19th December, 2020



Clevergene has entered into a Memorandum of Understanding (MoU) with CSIR-CFTRI (Mysore) to sequence the SARS-CoV-2 genome and derive valuable insights into virus genome changes (mutations), evolution, epidemiology. Clevergene has entered into a Memorandum of Understanding (MoU) with CSIR-CFTRI (Mysore) to sequence the SARS-CoV-2 genome and derive valuable insights into virus genome changes (mutations), evolution, epidemiology, and provide an understanding of the spatial and temporal information on infection dynamics of the SARS-CoV-2 virus.

As the COVID-19 pandemic continues to afflict the human population across the globe and many countries are experiencing the second wave of infections, there is a pressing need for India to enhance its pandemic fighting abilities and efforts. The SARS-CoV-2 virus, which is causing the COVID-19 pandemic, continues to mutate into different strains, making it difficult for the scientific and medical community to control or eradicate it. In such a scenario, the cutting-edge science of Genomics is coming to the rescue of mankind. There are major ongoing genomic projects in almost all countries, to understand the mutations, virulence, susceptibility, and infection patterns of the SARS-CoV-2 virus. Using the power of Genomics, at Clevergene's Next Generation Sequencing laboratory in Bengaluru, scientists at the CFTRI COVID Testing Lab, and team Clevergene, aim to work together towards unraveling better diagnostics and contributing to India's efforts of genomic surveillance. CSIR-CFTRI has established a COVID-19 testing center in Mysuru where it is testing an average of 1,000 samples daily.

CFTRI is also working on the development of novel dipstick and aptamer-based diagnostics in collaboration with the industry. Under the MoU, the development of novel diagnostics and vaccines for COVID-19 are also envisaged. The MoU was exchanged between Dr. B. Manohar (Chief Scientist and Adviser – M & A) and Mr. Tony Jose (Co-Founder and CEO – Clevergene) in the presence of senior CFTRI staff members Dr. Halami, Mr. Manilal, Mrs. Anita, and Dr. Ravindra PV. The team from Clevergene comprised of Mr. Dhruv Prasher, Dr. Rajasekhara Reddy, and Ms. Ria Dutta.

Published in:

[The Magazine Plus](#)

NML: Teachers brainstorm to adopt innovative content for teaching science

CSIR-NML

18th December, 2020



CSIR-National Metallurgical Laboratory (NML), Jamshedpur organised Scientists & Science Teachers Conclave (SSTC) on the topic Visualising Science on a virtual platform. The main objective of this online event was to create innovative content for teaching science to school students and also to encourage students to learn science with fun and creativity. The virtual program started with a video show on CSIR-NML's glorious journey in the past seven decades. Welcome address was delivered by Dr. Indranil Chatteraj, Director, NML. In his address he urged the teachers to bring in new concepts of science teaching and be the ambassadors to the students and the society in general.

This was followed by a technical presentation by Dr. Mita Tarafder, Chief Scientist of NML on 'Visualizing Science through CSIR's Virtual Lab initiative'. The concept of Virtual Lab (VL) has come as a recommendation from CSIR Society chaired by Hon'ble Prime Minister. The objective of VL is to arouse curiosity for science among students and it is believed that the concept of Virtual Lab will help take science to the village level and attract more students towards science. The deliverables of this project are creative teaching ideas by using various tools and techniques through games, videos, dramatics, quiz and comics. The curriculum will include a '2-minutes-talk' session for women scientists who will tell stories about career opportunities in STEM. Students will be encouraged to develop innovative tools and devices based on scientific concepts. Three parallel sessions Visualizing Physics, Visualizing Chemistry and Visualizing Maths were organized which were chaired by Dr. S Sivaprasad Chief Scientist, Dr. S Chakravarty Senior Principal Scientist and Dr. Mita Tarafder Chief Scientist of NML

respectively. These sessions were aimed to have focused group discussions to capture ideas and suggestions from school teachers for creating a road map to develop content for students and also to understand the support and guidance expected from the scientists of NML. This was then followed by two technical presentations by Dr Sivaprasad and Dr AK Mohanty, Principal Scientist of NML. The speakers mentioned the problems currently being faced by teachers to make small kids sit for the online classes and presented the idea of creating a students' corner to simulate scientific experiments remotely. The question and answer session received very good responses from the participants. This virtual program was attended by more than 100 teachers, students, scientists and professionals. Mr. Sudip Kundu, Sr. Scientists of NML extended a vote of thanks and appreciated all organisers for conducting the event successfully.

Published in:

[The Avenue Mail](#)

रूढ़िवादी सोच से पीछे होते चला गया भारत : डॉ. इन्द्रनील

एनएमएल जमशेदपुर और पत्र सूचना कार्यालय की ओर से भारत अन्तराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव का आयोजन

जमशेदपुर : पत्र सूचना कार्यालय व रीजनल आउटरीच ब्यूरो रांची, फोल्ड आउटरीच ब्यूरो गुमला, सीआईएमएफआर धनबाद और एनएमएल जमशेदपुर के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर भारत अन्तराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव का आयोजन किया गया। वेबिनार का विषय था- आत्म निर्भर भारत तथा वैश्विक कल्याण हेतु विज्ञान। विशेषज्ञों का कहना था कि विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही भारत का योगदान रहा है। भारत ने ही विश्व को शून्य का ज्ञान दिया, जिससे विज्ञान तथा गणित के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए। समय की दौड़ में मध्य युग में भारत विज्ञान में कुछ पिछड़ गया लेकिन आज के इस युग में हमारा प्रयास है कि विज्ञान के क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर

बनें तथा अपने अलावा पूरे विश्व को लाभ पहुंचाने का प्रयास करें। वेबिनार की शुरुआत करते हुए अपर महानिदेशक पीआईबी-आरओबी रांची अरिमर्दन सिंह ने कहा कि 2015 से आरंभ हुए भारत अंतराष्ट्रीय विज्ञान फेस्टिवल का उद्देश्य यह है कि विज्ञान को किस प्रकार आम लोगों तक पहुंचाया जाए तथा उनकी प्रगति और सुविधा का वाहक बनाया जाए, एनएमएल जमशेदपुर के निदेशक डॉ. इन्द्रनील चट्टोपाय ने कहा कि भारतीय विज्ञान का इतिहास बहुत गौरवपूर्ण रहा है। शून्य से लेकर न्यूमेरिक गिनती तक अगर देखा जाए तो इसमें भारत का ही योगदान दिखाई देता है। विज्ञान के हर क्षेत्र में प्राचीन काल में भारत का विकसित ज्ञान दिखाई देता है, जिसमें सर्जरी से लेकर आयुर्वेद की



दवाएं तक शामिल है। इसी प्रकार मेटलर्जी, केमिकल इंजीनियरिंग का क्षेत्र हो, शीशा बनाना हो या कपड़ा रंगना हो, इन समस्त विधाओं में भारत अग्रिम पंक्ति में दिखाई पड़ता है। हमारे यहां एक से बढ़कर एक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में और आर्किटेक्चर के क्षेत्र में कमाल दिखाने वाले वैज्ञानिक, इंजीनियर हुए हैं, जिन्होंने अविश्वसनीय मंदिरों

और ताजमहल जैसी इमारत का जीता जागता सुबूत विश्व पटल पर रखा, जो आज भी अपनी सफलता की कहानी कह रहा है। लेकिन बाद के शासकों ने विज्ञान पर कम ध्यान दिया और धार्मिक और रूढ़िवादी सोच ने भी भारतीय विज्ञान की प्रगति में रुकावट डाली। लेकिन फिर 1850 से 1950 तक के दौर में भारत को एसएन बोस, मेघनाद साहा, श्रीनिवासा रामानुजन एवं पीसी महालनोबिस जैसे वैज्ञानिक मिले जिन्होंने भारत के विज्ञान को फिर से नया मुकाम दिया। प्रसाद एम कुट्टन, आयोजन सचिव, विज्ञान भारती, झारखंड एवं पश्चिम बंगाल ने कहा कि विज्ञान फेस्टिवल का उद्देश्य जनमानस तक विज्ञान की जानकारी पहुंचाना और उन्हें विज्ञान की ओर आकर्षित करना है। हमारा भारतीय दर्शन सबके सामंजस्य से

आगे बढ़ता है और हमारे सारे त्योहार इस दर्शन को दर्शाते हैं। विज्ञान महोत्सव के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा आम लोगों, छात्रों और विज्ञान में रुचि रखने वाले लोगों तक जानकारी पहुंचाई जाती है जिसमें छात्रों एवं महिलाओं के लिए विज्ञान जैसे विषय प्रमुख है। उन्होंने आगे कहा कि विज्ञान महोत्सव में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि साहित्य, कला, इतिहास और संगीत से जुड़े लोग भी इसमें सम्मिलित हो सकें क्योंकि विज्ञान का प्रभाव समाज के लगभग हर क्षेत्र पर पड़ता है। चूंकि आयोजन अंतराष्ट्रीय स्तर का होता है, इसीलिए इसमें देश के अलावा विदेश के वैज्ञानिक सम्मिलित होते हैं। इस वेबिनार का समन्वय एवं संचालन क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी महविश रहमान ने किया।

Published in:

Udit Vani

India's aim is to become self reliant and work for global welfare

Press Information Bureau Ranchi, Regional outreach Bureau Ranchi field outreach Bureau Gumla in association with CSIR-CIMFR and CSIR-NML organised a webinar on 16-12-2020 on the topic "India International Science Festival: Science for Self-Reliant India and Global Welfare". The webinar was attended by senior experts from the field of science and technology. It was discussed that India has contributed in the field of science and technology since ancient times. It was India which gave zero to the world which brought huge development in the field of Mathematics. In the medieval times, India's development in Science was slowed down but now it is our effort that India should become self reliant and think about global welfare.

Arimardan Singh, Additional Director General of the PIB-ROB Ranchi said in his welcome note that the India International Science Festival was started in 2015 with the mission to bring Science to the common people and provide solutions to them. This year the theme is to become self-reliant and work towards global welfare. It is a matter of pride for us that such a big festival is being organised on the virtual mode and it is a golden opportunity for students, teachers and other people who have an interest in Science to get benefited by it.

Dr Indranil Chattoraj, Director CSIR-NML Jamshedpur said that India had a glorious past in science. She reiterated that India gave 'zero' to the world along with the first modern numeral system to the first

THIS YEAR THE THEME IS TO BECOME SELF-RELIANT AND WORK TOWARDS GLOBAL WELFARE. IT IS A MATTER OF PRIDE FOR US THAT SUCH A BIG FESTIVAL IS BEING ORGANISED ON THE VIRTUAL MODE AND IT IS A GOLDEN OPPORTUNITY FOR STUDENTS, TEACHERS AND OTHER PEOPLE WHO HAVE AN INTEREST IN SCIENCE TO GET BENEFITED BY IT.

quadratic equation and so on. She further said that India had made tremendous progress in the field of Plastic surgery, Ayurveda, Metallurgy etc. In the field of Civil Engineering and Architecture, progress can be seen through beautiful temples and monuments like the Taj Mahal which are a living embodiment of our glorious past. She opined that during the medieval times, religion caused a slowdown to the advancement in science but between 1850 to 1950, scientists like SN Bose, Meghnad Saha, Shrinivas Ramanujan and others made tremendous contributions in the field of science.

Another eminent participant Dr Pradeep K Singh, Director, CSIR-CIMFR Dhanbad said that the mission of this festival is to bring maximum number of people to the field of science. He said that if India has to become a developed nation, it has to make progress in the field of science and the youth espe-

cially should know about our rich history.

During last year's festival, children participated in the program and greatly benefited from it as their interest was ignited in science. Dr Singh further said that special steps are being taken at CSIR-CIMFR to motivate students to take interest in science. He further said that in the coming years, India will definitely make huge progress in the field of technology and Science.

Sriprasad Kuttan, Organising Secretary, Vijnana Bharati, Jharkhand and West Bengal said that the aim of the Science Festival is to attract common people towards science. People from the field of art, Literature, Culture, History, Music are also being encouraged to attend the festival. He concluded by inviting everybody to register for the virtual festival and make it a grand success.

The webinar was coordinated and moderated by Field Publicity Officer Mahvish Rahman. The technical and coordination support was given by Field Publicity Officers Shahid Rahman and Onkar Nath Pandey. Dilip Kumbhkar and P. K. Mishra of CSIR-CIMFR Dhanbad and Mita Tarafdar and A. K. Sahu gave their valuable contribution in organising the program.

The webinar was attended by officers, staff, scientists and students of CSIR labs of Jharkhand along with officers and staff of PIB, ROB, SNDD, Doordarshan, Aakashvani of Jharkhand and other states. Editors and journalists from print and broadcast media also attended the webinar.

भारत की सोच है कि विज्ञान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के साथ विश्व कल्याण का प्रयास हो

संवाददाता

रांची : पत्र सूचना कार्यालय व रीजनल आउटरीच ऑफिस, रांची तथा फील्ड आउटरीच ऑफिस, गुमला एवं सीएसआईआर - सीआईएमएफआर, सीएसआईआर - एनएमएल के संयुक्त तत्वावधान में 'भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव : आत्म निर्भर भारत तथा वैश्विक कल्याण हेतु विज्ञान' विषय पर आज दिनांक 16 दिसंबर 2020, बुधवार को वेबिनार परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में विज्ञान एवं अनुसंधान क्षेत्र से जुड़े प्रमुख विशेषज्ञों ने भाग लिया। विशेषज्ञों का कहना था कि भारत का विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही बड़ा योगदान रहा है। भारत ने ही विश्व को शून्य का ज्ञान दिया, जिससे

विज्ञान तथा गणित के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए। समय की दौड़ में मध्य युग में भारत विज्ञान में कुछ पिछड़ गया लेकिन आज के इस युग में हमारा प्रयास है कि विज्ञान के क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर बनें तथा अपने अलावा पूरे विश्व को लाभ पहुंचाने का प्रयास करें। वेबिनार परिचर्चा की शुरुआत करते हुए अपर महानिदेशक पीआईओ-आरओबी, रांची अरिम्पदन सिंह ने कहा कि 2015 से आरंभ हुए भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान फेस्टिवल का उद्देश्य है कि विज्ञान को किस प्रकार आम लोगों तक पहुंचाया जाए तथा उनकी प्रगति और सुविधा का वाहक बनाया जाए। आमतौर पर किसी देश की प्रगति का स्तर विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति से आंका जाता है, इसीलिए हमें प्रयास करना है कि हम विज्ञान



के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनें तथा पूरे विश्व को लाभ पहुंचाने का प्रयास करें क्योंकि हमारा दर्शन वैश्विक कल्याण का दर्शन है और हम वसुधैव कुटुम्बकम् में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा कि यह वर्ष का विषय है कि इतने बड़े महोत्सव का वर्चुअल मोड में आयोजन किया जा रहा है। यह एक सुनहरा अवसर है जिसमें वैज्ञानिक, शिक्षक, छात्र,

खुदबिखुद तथा विज्ञान में रुचि रखने वाले आम लोग भी लाभान्वित हो सकेंगे। डॉ इंदनील चट्टोपाय, निदेशक सीएसआईआर - एनएमएल, जमशेदपुर ने कहा कि भारतीय विज्ञान का इतिहास बहुत गौरवपूर्ण रहा है। शून्य से लेकर न्यूक्लियिक गिनती तक अगर देखा जाए तो इसमें भारत का ही योगदान दिखाई देता है। विज्ञान के हर क्षेत्र में प्राचीन काल में

भारत का विकसित ज्ञान दिखाई देता है, जिसमें सर्जरी से लेकर आयुर्वेद की दवाएं तक शामिल हैं। इसी प्रकार मेटलर्जी, केमिकल इंजीनियरिंग का क्षेत्र हो, शीशा बनाना हो या कापड़ा रंगना हो, इन समस्त विधाओं में भारत अग्रिम पंक्ति में दिखाई पड़ता है। हमारे यहां एक से बढ़कर एक सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में और अफिटिक्टर के क्षेत्र में कमाल दिखाने वाले वैज्ञानिक, इंजीनियर मिलते हैं जिन्होंने अविश्वसनीय मंदिरों और ताजमहल जैसी इमारत का जीता जागता सुकृता विश्व फल पर रखा, जो आज भी अपनी सफलता की कहानी कह रहा है। लेकिन बाद के शासकों ने विज्ञान पर कम ध्यान दिया और धार्मिक और रूढ़िवादी सोच ने भी भारतीय विज्ञान की प्रगति में रुकावट डाली। लेकिन

फिर 1850 से 1950 तक के दौर में भारत को एसएन बोस, मेघनाद साहा, श्रीनिवास रामानुजन एवं पीसी महालनोबिस जैसे वैज्ञानिक मिले जिन्होंने भारत के विज्ञान को फिर से नया मुकाम दिया। सीएसआईआर-सीआईएमएफआर, धनबाद के निदेशक प्रदीप के। सिंह ने कहा कि इस महोत्सव का उद्देश्य है कि अधिक से अधिक लोगों को विज्ञान से जोड़ा जाए। अगर भारत को एक विकसित राष्ट्र बनना है तो भारत को विज्ञान में अग्रसर करना होगा और अपने गौरवपूर्ण इतिहास को जानना होगा। पिछले विज्ञान महोत्सव के दौरान बच्चों को इससे जुड़ने का कार्यक्रम रखा गया था जो अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुआ और बच्चों के बीच में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा बढ़ी।

ہندستان سائنس کے شعبہ میں خود کفیل بنے اور دنیا کو مستفید کرے

پنی آئی بی راہی اور گملا کے زیر اہتمام خود کفیل بھارت اور عالمی فلاح کیلئے سائنس کے موضوع پر مباحثہ کا انعقاد

ہندستانی سائنس کی تاریخ اثر دار رہی ہے، بھارت نے دنیا کو صفر کے علم سے آگاہ کرایا

بوس، میٹھنا ساہا، سرینواسا رامانوجن اور پنی سی مہالونیس جیسے سائنس دان ملے جنہوں نے ہندوستان کی سائنس کو ایک نیا مقام دیا۔ سی ایس آئی آر سی آئی ایم ایف آر، دھندلہ کے ڈائریکٹر مسٹر پردیپ کے سنگھ نے کہا کہ اس مہتمم کا مقصد زیادہ سے زیادہ لوگوں کو سائنس سے جوڑنا ہے۔ اگر ہندوستان کو ایک ترقی یافتہ قوم بنانا ہے تو ہندوستان کو سائنس میں اپنی کارکردگی کا مظاہرہ کرنا ہوگا اور اپنی قابل فخر تاریخ کو جاننا ہوگا۔ گذشتہ سائنس فیسیول کے دوران بچوں کو اس سے غمک کرنے کے لئے ایک تربیتی پروگرام کا انعقاد کیا گیا تھا۔ جو انتہائی مفید ثابت ہوا اور بچوں میں سائنس کے بارے میں جس کو بڑھایا۔ انہوں نے یہ بھی بتایا کہ بچوں کو سائنس اور اس کے بارے میں بتانے کے لئے دھندلہ میں ایک سینٹر قائم کیا جا رہا ہے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ جس طرح سے سائنس کے شعبہ میں نوجوان لڑکے لڑکیاں رہی ہیں، ہندوستان آنے والے سالوں میں سائنس کے میدان میں یقیناً ترقی کرے گا۔ اس ویڈیو کے کوآرڈینیٹر نیشن اور نظامت کے فرائض سبھل پبلسٹی آفیسر مسٹر مہوش رحمان نے انجام دیئے۔ اسی کے ساتھ ساتھ، سبھل پبلسٹی مدد اور کوآرڈینیٹر نیشن بالترتیب سبھل پبلسٹی آفیسر مسٹر شاہد رحمان اور مسٹر اوم کار ناتھ پانڈے نے پیش کئے۔ اس کے علاوہ سی ایس آئی آر-سی آئی ایم ایف آر کے دیپ مسٹر، پنی کے مسٹر اور مسٹر مہتا ترنادر اور این کا ساہو کا تعاون رہا۔



ایڈ-سٹریکٹر جنرل پنی آئی بی-آر او بی، راہی، مسٹر ارمین سنگھ نے ویڈیو مباحثہ کا افتتاح کرتے ہوئے کہا کہ سنہ 2015 میں شروع ہند-بین الاقوامی سائنس میلہ کا مقصد یہ ہے کہ سائنس کو عام لوگوں تک کیسے قابل رسائی بنایا جائے اور ان کی ترقی اور سہولت کا محرک بنے۔ عام طور پر کسی ملک کی ترقی کی سطح سائنس کے میدان میں ہونے والی پیشرفت سے ناپی جاتی ہے، یہی وجہ ہے کہ ہمیں سائنس کے میدان میں خود کفیل رہنے کی کوشش کرنی ہوگی۔ جس سے پوری دنیا فائدہ اٹھائے۔ کیونکہ ہمارا فلسفہ عالمی فلاح و بہبود کا فلسفہ ہے اور ہم وسودو میں یقین رکھتے ہیں۔ انہوں نے کہا کہ یہ خوشی کی بات ہے کہ اتنے بڑے مہلے کا انعقاد اور چوں انداز میں کیا جا رہا ہے۔ یہ سہری موقع ہے جس میں سائنس دان، اساتذہ، طلباء، دانشور اور سائنس سے دلچسپی رکھنے والے عام لوگ بھی مستفید ہوں گے۔ ڈائریکٹر نیل چوہراج، ڈائریکٹر سی ایس آئی آر-این ایم ایل، جمشید پور نے کہا کہ

جدید بھارت نیوز سروس
راہی 16 دسمبر پریس انفارمیشن یورو ورلڈ آؤٹ ریچ یورو راہی، فیلڈ آؤٹ ریچ یورو گملا اور سی ایس آئی ایم ایف آر سی ایس آئی آر این ایم ایل کے مشترکہ تعاون سے ہندوستان بین الاقوامی سائنس مہتمم خود کفیل بھارت اور عالمی فلاح کیلئے سائنس موضوع پر بدھ 16 دسمبر کو ویڈیو مباحثہ کی انعقاد کیا گیا۔ اس مباحثے میں سائنس اور تحقیق کے شعبہ سے جوئے اہم ماہرین نے حصہ لیا۔ ماہرین کا کہنا تھا کہ ہندوستان کا سائنس کے شعبہ میں قدیم زمانہ سے ہی بہت بڑا تعاون رہا ہے۔ بھارت نے ہی دنیا کو صفر کا علم دیا۔ جس سے سائنس اور ریاضی کے شعبہ میں بنیادی تبدیلیاں آئی ہیں۔ زمانے کی دوڑ میں ہندوستان قرون وسطیٰ میں سائنس سے تھوڑا سا پیچھے پڑا گیا، لیکن آج کے اس دور میں، ہماری کوشش ہے کہ سائنس کے میدان میں ہم خود کفیل ہو جائیں اور اپنے علاوہ پوری دنیا کو فائدہ پہنچانے کی کوشش کریں۔

ମଜା ଡ୍ରାଏର ଚାଲିନା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ

ବିଶ୍ୱ ଶିକ୍ଷା : ନବରଙ୍ଗପୁର

ନବରଙ୍ଗପୁର ଜିଲ୍ଲାର ମଜା ଚାଷୀଙ୍କୁ ଅଧିକ ଲାଭଦାୟକ ହେବା ପାଇଁ ଏବେ ଶିକ୍ଷା ଓ ଜାରିଶିଳ୍ପ ଶିକ୍ଷା କୌଶଳ ପ୍ରଜ୍ଞା ମାଧ୍ୟମରେ ଖର୍ଚ୍ଚ ଓ ବସ୍ତୁ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ ରୁଚନେଶ୍ୱର ପାଠ୍ୟ ନବରଙ୍ଗପୁର ରୁଜର ଧାରଣାରେ ଠାରେ ଉତ୍ତମ ଜାତ କୌଶଳରେ ନିର୍ମିତ ମଜାକୁ ଶୁଖାଇବା ଯନ୍ତ୍ର(ଡ୍ରାଏର)କୁ ଚାଷୀ ଓ ସାଧ୍ୟ ସହାୟକ ଦଳର ସଭ୍ୟମାନଙ୍କୁ ପ୍ରଦର୍ଶନ ଓ ଚାଲିନା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇପାରିଛି । ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ନବରଙ୍ଗପୁର ଜିଲ୍ଲାର ଉପଜିଲ୍ଲାପାଳ ଲାଲୁ ଲାଲ ଉପସ୍ଥିତ ରହି ଶିକ୍ଷା ଓ ଜାରିଶିଳ୍ପ ପ୍ରଜ୍ଞା ମାଧ୍ୟମରେ ଅନେକ ବୈଜ୍ଞାନିକ ପଦ୍ଧତିରେ ଚାଷର ଜାତ କୌଶଳ ପ୍ରଦର୍ଶନ ହେଉଛି ସେହି ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ସାମିଲ ହୋଇ ଆସିବା



ଓ ସାମାଜିକ ଉନ୍ନତି କରିବା ପାଇଁ ସେ ଆହ୍ୱାନ ଦେଇଥିଲେ ।

ଜିଲ୍ଲା ମାଧ୍ୟମ ଅଧିକାରୀ କୁର୍ତ୍ତର ମାଲିକି ଯୋଗ ଦେଇ ମାଧ୍ୟମ ଆଦ୍ୟ ପ୍ରସ୍ତୁତିରେ ଏହି ଡ୍ରାଏର ମାତ୍ର ଆଦ୍ୟ ପ୍ରସ୍ତୁତିରେ ଉତ୍ତମ ମାତ୍ର ଆସିବା ସହ ମାତ୍ର ଆଦ୍ୟକୁ ଅଧିକ ଚିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗଢ଼ିତ ରଖାଯାଇପାରିବ । ଏହି ଡ୍ରାଏର

ବ୍ୟବହାର କରି ମଜାକୁ ଅଳ୍ପ ଖର୍ଚ୍ଚରେ ଶୁଖାଇବା ସହ ଆଦ୍ୟ ପ୍ରସ୍ତୁତି କରାଯାଇ ପାରିବ ବୋଲି ସେ କହିଥିଲେ । ଆଇଏମଏମଟିର ପ୍ରଧାନ ବୈଜ୍ଞାନିକ ସ୍ୱେଚ୍ଛାକ୍ଷିଷ୍ଟ ବେହେରା ଯୋଗ ଦେଇ ଡ୍ରାଏର ଦ୍ୱାରା ଏକ ପଥରେ ୫୦ କେଜି ମଜାକୁ ଶୁଖାଯାଇପାରିବ ବୋଲି କହିଥିଲେ ।

ଏହାର ମୂଲ୍ୟ ୩୦ ହଜାର ଟଙ୍କା ରଖାଯାଇଛି । ଏହା ଉତ୍ତମ ଜାତ ଓ ସୌର ଶକ୍ତି ଉତ୍ତମ ବ୍ୟବହାର କରାଯାଇପାରିବ । ଅନ୍ୟ ଏକ ଡ୍ରାଏର ବିଦ୍ୟୁତ୍ ଚାଳିତ ପଥରେ ଜାତରେ ଚାଲୁଥିବା ଏହାର ମୂଲ୍ୟ ୫୦ ହଜାର ଟଙ୍କା ରହିଛି । ଏହି ଡ୍ରାଏର ମାଧ୍ୟମରେ ପଥାକୁ ୪୦୦ କେଜି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଶୁଖାଯାଇପାରିବ ।

ଡ୍ରାଏର ବ୍ୟବହାର ଦ୍ୱାରା ଜାତ ପଦ୍ଧତିରୁ ମୁକ୍ତ କରିବା ସହ ଅଧିକ ସାମ୍ବ୍ୟପଯୋଗୀ ହୋଇପାରିବ ବୋଲି ସେ ପ୍ରଜ୍ଞା କରିଥିଲେ । ଯୁବ ଉଦ୍ୟୋଗୀ କ୍ୟୋଟି ରଜନ କନ୍ଧ ଏହି ମଜା ଡ୍ରାଏର ବ୍ୟବହାର ଦ୍ୱାରା ମଜାର ମାତ୍ର ଅଧିକ ହୋଇପାରିବ ବୋଲି କହିଥିଲେ । ଶିକ୍ଷା ଓ ଜାରିଶିଳ୍ପ ଜାତ କୌଶଳ କ୍ରିୟାତ୍ମକ କମିଟି ସଦସ୍ୟ ନିଷ୍ଠା ନାରାୟଣ ବସି ଏହି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ପରିଚାଳନା କରିଥିଲେ ।

IISF 2020 to be organised virtually & jointly by DST, CSIR, MoES, MoHFW, DBT: Sci-Tech Ministry

CSIR-NISTADS

17th December, 2020



In the pandemic when a lot of excitement seems to have come to a halt, it is science and technology that are keeping the spirits high, said a press communication from the Ministry of Science & Technology, adding that one such live example is the India International Science Festival (IISF) 2020 where science can be experienced virtually. The nodal institution for the IISF 2020 is CSIR-NISTADS, New Delhi. This Science Festival is organised jointly by the Department of Science and Technology (DST), Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Earth Sciences, Ministry of Health & Family Welfare, and the Department of Biotechnology (DBT).

IISF will take place from 22nd to 25th December 2020. “We have events where students can go for virtual tours, 3D exhibitions, virtual events, panel discussions, lectures and many more. There are 41 events and everyone is welcome at the event,” said Ranjana Aggarwal, Director, CSIR-National Institute of Science, Technology and Development Studies (NISTADS), New Delhi, on Thursday, 17th December. She was addressing the JC Bose University of Science and Technology, YMCA. The University, in association with Vijnana Bharati (VIBHA), Haryana, organised a curtain raiser for IISF 2020. Director Aggarwal elaborated on the various events and their scopes. She spoke about how students can benefit with the programs at the ease of sitting at their homes but without missing the real science. “When the pandemic happened, we thought it will get over in a few months and we will be able to conduct the program like we did last year. But by September it became clear that it won’t be possible for us to conduct it physically. Then we thought of conducting it on Produced by Science Communication and Dissemination Directorate, (SCDD), CSIR, A

virtual platforms,” said Jayant Sahasrabudhe, National Organising Secretary, VIBHA. He explained that IISF is involving global and overseas Indian researchers and academics. He said that despite the Covid-19 outbreak, the number of events has increased and there is a plan to increase it in following festivals. Dinesh Kumar, Vice-Chancellor of the University, congratulated and appreciated the efforts made by CSIR-NISTADS, Vijnana Bharati, and different Ministries to organise this mega festival of science during the current prevailing pandemic. In another outreach programme of the IISF 2020, Ranjana Aggarwal gave a popular science lecture on the objectives and significance of the science festival. The Science Ministry explained that the Science Communicators’ Group had organised this outreach event to make people aware of the IISF. Information on various activities related to the Science Festival and registration of partners are available on the IISF website.

Published in:
[Indus Dictum](#)

अविष्कार स्वार्थ नहीं परमार्थ के लिए हो : अरिमर्द

भारत का विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल से बड़ा योगदान

संवाददाता

रांची : पत्र सूचना कार्यालय व रीजनल आउटरीच ऑफिस, रांची तथा फील्ड आउटरीच ऑफिस, दुमका एवं सीएसआईआर-सीएमईआरआई दुमपुर के संयुक्त तत्त्वधान में 'भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव : आत्मनिर्भर भारत तथा वैश्विक कल्याण हेतु विज्ञान' विषय पर गुरुवार को दूसरे वेबिनार परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में शिक्षा, विज्ञान एवं अनुसंधान क्षेत्र से जुड़े प्रमुख विशेषज्ञों ने भाग लिया। विशेषज्ञों का कहना था कि भारत का विज्ञान के हर क्षेत्र में प्राचीन तथा वैदिक काल से ही बड़ा योगदान रहा है। विज्ञान और तकनीक से मानव समाज और विश्व के समग्र उत्थित चुनौतियों के समाधान संभव हैं।

अविष्कार देश और काल की सीमा से परे : वेबिनार परिचर्चा की शुरुआत करते हुए अपर महाविदेशक पीआईसी-आरओबी, रांची अरिमर्द सिंह ने कहा



चुनौतियों का समाधान संभव : प्रो हरीश

सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुमपुर के निदेशक प्रो (डी) हरीश हिमानी ने विज्ञान और तकनीक के समुचित अनुप्रयोग से मानव समाज और संपूर्ण विश्व के समग्र उत्थित चुनौतियों के समाधान संभव हैं। वैज्ञानिक नवोन्मेष के द्वारा न सिर्फ हम आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को मजबूत कर सकते हैं, बल्कि विश्वकल्याण की दिशा में प्रभावी योगदान दे सकते हैं। आवश्यकता है प्रभाव, सस्ती और सम्प्रेषणीय और सतत तकनीकों के विकास की। यह संस्थान जन समुदाय के हित दृष्टिकोण से तकनीकों के समवर्द्ध और समुचित उपलब्धता तथा विज्ञान के तकनीक और उत्पाद में प्रभावी रूपांतरण पर विश्वास करता है।

प्राचीन काल से हमारी सभ्यता काफी विकसित : डॉ आभा

रांची विमेंस कॉलेज की सह-प्राचार्य डॉ आभा प्रसाद ने कहा कि मानव काल का इतिहास अग्नि और पहिरे के आविष्कार से शुरू होता है। पहले के जो मनुष्य थे वह भोजन के लिए दूसरे जीव जंतु पर निर्भर करते थे इसके लिए उन्होंने तेज पाथर और हड्डी से औजार बनाये और अपने मस्तिष्क और हाथ का जो सामंजस्य बैठाया इसकी वजह से उन्हें होमो सेपियंस कहा जाने लगा। इंडस वैली सिविलाइजेशन में जो खस्तुर मिली हैं उनसे पता चलता है कि वह सभ्यता काफी विकसित थी। मकान बनाने की कला थी और वहां अच्छे प्लैनिंग से बने शहर थे। उस समय ज्योमेट्री, मेजरमेंट, इंजीनियरिंग सभी का ज्ञान था। खेती के लिए हल का इस्तेमाल होता था, जल से खपार होता था, तो जहाज भी होगा। विज्ञान और तकनीक की हमेशा से भारत में उन्नी हुई है। वैदिक काल में आयुर्वेद, सर्जरी, इम्प्युनिटी पर लगातार शोध हुए हैं और किताबें लिखी गयीं। गणित में और ज्योतिष विज्ञान में भी काफी काम हुआ है। धातु के औजार बनाने में भी विकास दिखता है। अकिंटेकर के विकास से ही भारत में भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। ब्रिटिश काल के समय जूलॉजी, बॉटनी आदि पर काफी शोध हुआ।

विज्ञान के प्रति लोगों व जागृत करें : डॉ आइशा

इंस्टीट्यूट ऑफ ऑप्टोएलेक्ट्रॉनिक्स, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की डॉ एस आइशा रजा ने कहा कि तथा तकनीक एक अच्छा समाज बनाने में तभी होगा जब हम साइंटिफिक टेपर को जनता में उन्नी कहें कि इसके लिए हमारे सविन अर्किटल 51अ के तहत भी यह बात कही गई हर नागरिक को वैज्ञानिक मानसिकता विकास योगदान देना चाहिए। इस वेबिनार का समन संचालन क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी शाहिद रह किया। वहीं तकनीकी सहायता तथा समन्वय क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी अंकार नाथ पांडेय तथा महशिरा रहमान द्वारा दिया गया। वेबिनार में तथा जनसंचार संस्थानों के अधिकारी, कर्म खजों के अलावा पीआईसी, आरओबी, ए दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के अधिकारी-का तथा दूसरे राज्यों के अधिकारी-कर्मचारियों ने भी लिया। गीत एवं नाटक विभाग के अंतर्गत कला सदस्यों, आकाशवाणी के पीटीसी, दूरदर्शन के तथा मीडिया से संपादक और पत्रकार भी शामिल

कि भारत ने हजार समग्र कुशलता से परे हो। स्वार्थ के लिए ही नहीं साध-साध हम लोगों के जीवन में खर्चअव है। इस खज, शोधों, आम साइंटिफिक टेपर बढ़ाने की को पर विश्वास है कि हमें ही के समाज का ए भी है उनके लिए बुराहली हमें जारी रखना है। इनके लिए हमें उत्कृष्टन, जा रही है ताकि सबकी स हमेशा से रहे और हमें ही के हलते कराए। हमें जा नभर ने प्रदेख आमों के भी प्रकाश कर लिये। जय नोस्टेशन, प्रतिभा बढ़े और बच्चों में लॉनिंग बढ़े हुए की क्षमता व अविष्कार हो, वह देश और काल की और विज्ञान में हाई टेक्नोलॉजी का यह विज्ञान महोत्सव पहले बार एंग्जीकेशन आदि के माध्यम से लॉनिंग बढ़े हुए की क्षमता व

CSIR-CMERI

17th December, 2020

PIB Webinar: Since ancient era India has contributed a lot in Science



By Correspondent

Ranchi: The PIB in association Field Outreach Bureau Dumka and CSIR-CMERI Durgapur organised a webinar on Aatm Nirbhar Bharat and Science for Global Welfare in which experts from education, science and research participated.

In the meeting the experts said that since the vedic period India has contributed a lot in the field of Science and with the use of science and technology

it was possible to address the challenges before the humanity.

Addressing the webinar ADG PIB Arimardan Singh said that Indian has always believed in the doctrine of World is One and any invention should not be confined to one country or period but should be used for the betterment of all.

He said that it is important that the country first becomes self reliant and use high technology to bring prosperity in the lives of the people. He said that for the

first time the event is virtual through which efforts are being made to increase the scientific temper among the students, researchers and common people through panel discussion, workshops, live demonstrations, exhibitions etc.

Director of CSIR-CMIRE Durgapur Professor Harish Hirabi said that with the use of science and technology it is possible to address the challenges before the humanity. He said that scientific inventions not help in realising the dream

of self reliant India but also helps in welfare of the entire human community however for that it is important to develop effective and cheap technologies.

Principal of Ranchi Women's College Dr Abha Prasad said that science and technology have always moved upwards in the country. She said that there was a need to understand that without use of Science progress of human race is not possible and also stressed on the need to create awareness among the children for Science.

Reporter Post, Ranchi

Published in:
Reporter Post

قدیم زمانے سے ہی سائنس کے ہر شعبہ میں ہندستان کا اہم تعاون رہا ہے

پنی آئی بی رانچی اور دمکا کے زیر اہتمام خود کفیل بھارت اور عالمی فلاح کیلئے سائنس کے موضوع پر مباحثے کا انعقاد

اور قابل تائید، مسلسل تکنیکوں کی ترقی کی۔ یہ
 اوزار عوامی برادری کے مفاد کے پیش نظر
 سے تکنیکوں کے بروقت اور مناسب دستیابی
 اور سائنس کے تخلیق اور مصنوعات میں
 اثر اور تبدیلی پر یقین رکھتا ہے۔ راہنمی
 و محنت لائق کی اسلٹ پروفیسر ڈاکٹر آجہا
 پرہارے نے کہا کہ انسانی دور کی تاریخ آگ
 اور پھینے کے انکارات سے شروع ہوتا
 ہے۔ پہلے کے جو انسان تھے وہ کھانا کھاتے
 دوسرے ہاتھ پر منصر تھے اس کھاتے
 انہوں نے چیز پتھر اور ہڈی سے اوزار بنائیں
 اور اپنے دماغ اور ہاتھ کا جو تلی میل نکھایا
 اس کی وہ سے انہیں 'ہومو سیکٹنس' کہا
 جانے لگا۔ انہیں وہی ہو یاد رکھیں میں جو
 چیزیں ملتی ہیں ان سے ہت پلتا ہے کہ وہ
 ثقافت لائی ترقی پالتی تھی۔ مکان بنانے کے
 آئیں تھے اور وہاں اچھے چانگ سے بنے
 شہر تھے۔ اس وقت جمہوریت، میڈیسن،
 انجینئرنگ سبھی کا علم تھا۔ کاشتکاری کھیتوں
 کا استعمال ہوتا تھا۔ انہوں نے کہا کہ جب



ہر پیش میرانی نے سائنس اور ٹیکنیک کے مناسب استعمال سے انسانی معاشرے اور پوری دنیا کے سامنے موجود چیلنجوں کے حل پر روشنی ڈالی۔ انہیں نے کہا کہ سائنس ٹیکنالوجی کے ذریعہ نہ صرف ہم خود کفیل جہازات کے تصورات کو مضبوط کر سکتے ہیں بلکہ عالمی فضاء کی سمت میں اثر وارتقاء و سائنس کے ذریعہ ہی ہے ہر اثر و

پہلی بار ورہائے دل ہے۔ اس میں طلبہ، محققین، امام مومنین کیلئے فضائل و سکینہ، درستی و ایمان، یونیورسٹی، ایجوکیشن وغیرہ کے توسط سے سائنٹفک سمپوزیمز کے اہتمام کی کوشش کی جارہی ہے تاکہ کمی کی دلچسپی اور صلاحیت بڑھے اور خصوصی طور پر بچوں میں رنگ بانی رنگ کی صلاحیت بڑھے۔

مقصود ہمیشہ رہا ہے کہ کوئی بھی اسکاہوات ہو وہ ملک اور وقت کی سرحد سے دور ہو۔ خود غرضی کھیلے نہیں بلکہ بھی کے مفاہوات کھیلے ہو۔ اس کھیلے ضرورت ہے کہ پہلے ہم خود دلیل بنے اور ساتس میں اپنی ٹیکنالوجی کے ساتھ ساتھ عام لوگوں کی زندگی میں خوشحالی لائیں۔

جدید بھارت نیوز سروس

پانچمی ۱7 دسمبر پاپیئس انفارمیشن کے رو اور
رجنل آؤٹ ریج کے رو راہگی، فیلڈ آؤٹ ریج
کے رو ویکا اور سی ایس آئی آر سی ایم آئی آر
ویکا کے مشر کہ تعاون سے ہندستان میں
الاقوامی سائنس فیسیٹیول: خود کفیل بھارت اور
مالی علاج کھنے سائنس کے مونیوٹ پر
۱7 دسمبر جمہرات کو دوسرے ویویا
مہاشے کا انعقاد کیا گیا۔ اس مہاشے میں
تعلیم سائنس اور تحقیق کے شعبہ سے منسلک
اہم ماہرین نے حصہ لیا۔ ماہرین کا کہنا تھا
کہ ہندستان کا سائنس کے ہر شعبہ میں قدیم
زمانہ اور وہ یک دور سے ہی اہم تعاون رہا
ہے۔ سائنس اور تحقیق سے انسانی معاشرہ
اور دنیا کے سامنے موجود چیلنجوں کا حل ممکن ہو
پایا۔ ویویا تنظیم کی شروعات کرتے ہوئے
ایچ۔ جی ڈائریکٹر جنرل پی آئی آر او پی راہگی
مسٹر اریشون سنگھ نے کہا کہ ہندستان نے
ہمیشہ دوسروں کو علم و سائنس کے بارے میں

Jadeed Bharat, Ranchi

Published in:
Jadeed Bharat

Pure EV to tie-up with CSIR-CECRI for indigenising lithium-ion battery technology for EVs

CSIR-CECRI

16th December, 2020



IIT Hyderabad-incubated startup Pure EV is collaborating with CSIR – Central Electro Chemical Research Institute (CECRI), headquartered at Karaikudi with its extension centre in Chennai, on indigenising Lithium-Ion battery (LIB) technology for electric vehicles. Pure EV has signed a memorandum of understanding (MoU) with CSIR- CECRI to undertake joint research on the production of battery packs, validation of LIB cells and addressing the specific requirements to ensure the suitability of developed LIBs for critical performance at the standard operating procedure (SoP) conditions.

The MoU will set the path forward for indigenous Lithium-Ion technology and help the country boost EVs apart from stationary and storage applications. A lithium battery is the most reliable and commercially-viable choice for electric vehicles across the world. Currently, in India, Lithium cells are mainly imported from China, which is a very critical dependence necessary for final battery packs required for electric vehicles. To address this market monopoly, CSIR has launched a project with an aim to producing LIBs on a 100 MW scale. V K Saraswat, member, NITI Aayog said: “This collaboration between Pure EV and CECRI will lead to important outcomes on areas like battery thermal management system (BTMS) and safety which are critical to for mass scale commercialisation of these cells. NITI Aayog strongly encourages such partnerships which can lead to a more flexible supply chain for the evolution for an important industry like electric vehicles. ” To reduce the dependency on imports of battery components, India needs to achieve a similar level of performance at the battery pack level.

apart from just manufacture the battery cells. Under this MoU, Pure EV will also provide critical feedback to CSIR- CECRI in understanding the technical limits of the manufactured cells and the additional improvements which will be required to achieve mass scale commercialisation. “Our extensive R&D work in the battery thermal management system gives us unique insights into the battery performance and lifecycle enhancement. We will work closely with CECRI team in enabling them to realise the full potential of their initiative. We will carry out extensive testing for performance validation across various EV 2W models across the pan India terrain conditions and benchmark with respect to the imported cells and providing them crucial feedback to achieve mass scale commercialisation,” said Rohit Vadera, CEO, Pure EV.

Published in:

[The Financial Express](#)

CSIR-IICT

16th December, 2020

‘Science and tech key to self-reliance’

IICT scientist delivers keynote address on globalisation and Atmanirbhar Bharat

SPECIAL CORRESPONDENT
HYDERABAD

Science & technology has a significant role to play in achieving the aim of self-reliant India with the Central government, too, according it priority. CSIR scientists, in particular, have been playing a key role not only in combating COVID-19 but also in space research, development of indelible ink, drugs, pheromone application technology and White Revolution, said M. Chandrasekharam, senior principal scientist, CSIR-Indian Institute of Chemical Technology (IICT) on Tuesday.

Delivering the keynote address of the webinar on ‘Globalisation-self reliant India - The need, the transformation and the way forward’ or-



India is no longer only a ‘consumer of knowledge’ adopting all best practices developed in other countries and but has emerged as producer of knowledge.

M. CHANDRASEKHARAM,
Senior principal scientist, IICT

ganised by the Press Information Bureau and the Regional Outreach Bureau of the Ministry of Information & Broadcasting, he said scientists and researchers are playing their role in making India self-reliant in all fields.

CSIR contributions towards ‘Atmanirbhar Bharat’ also includes development of PPE kits, ventilators, sani-

tisers, testing, repurposing of drugs like Favipiravir, Remdesvir etc. The paper-based diagnostic technology ‘Feluda’ has been approved by the Drug Controller General of India, he pointed out.

CSIR-IICT had also developed technology for non-clinical masks under a project funded by Cipla Foundation for distribution of one lakh masks to the under-pri-

vileged sections to prevent spread of the disease, he pointed out. “India is no longer only a ‘consumer of knowledge’ adopting all best practices developed in other countries and but has now emerged as producer of knowledge,” Dr. Chandrasekharam added.

Precursor to IISCF

The webinar is being organised as a pre-cursor to the India International Science Festival (IISCF)-2020 from December 22-25, said PIB director Shruti Patil. ROB assistant director M. Krishnakanth also spoke. Students, officers and staff of various media units of the I&B Ministry, scientists and researchers from IICT participated, a press release said.

Published in:

The Hindu

శాస్త్ర సాంకేతిక రంగాలు కీలకం

ఐఐసీటీ సీనియర్ ప్రిన్సిపల్ శాస్త్రవేత్త డాక్టర్ ఎం.చంద్రశేఖరం

ఈనాడు, హైదరాబాద్ : ఆత్మ నిర్భర్ భారత్ సాధనలో శాస్త్ర సాంకేతిక రంగాలది కీలక పాత్ర అని ఇండియన్ ఇన్స్టిట్యూట్ ఆఫ్ టెక్నాలజీ(ఐఐసీటీ) సీనియర్ ప్రిన్సిపల్ శాస్త్రవేత్త డాక్టర్ ఎం.చంద్రశేఖరం అన్నారు. ఈనెల 22 నుంచి 25 వరకు కేంద్రం ప్రజుత్వం 'ఇండియా ఇంటర్నేషనల్ సైన్స్ పెర్స్పెక్టివ్-2020'ని నిర్వహిస్తున్న సందర్భంగా కేంద్ర సమాచార ప్రసార శాఖకు చెందిన పత్రికా సమాచార కార్యాలయం(పీఐబీ) మంగళవారం వెబినార్ ఏర్పాటు చేసింది. ఇందులో ఆయన మాట్లాడుతూ.. కొవిడ్ సమయంలో దేశ ఆవసరాలకు పీపీఈ కిట్లు, వెంటిలేటర్లు తయారు చేయడమే కాక ఇతర దేశాలకు ఎగుమతి చేయగలిగామని వివరించారు. పీఐబీ ఆర్డీబీ డైరెక్టర్ శృతిపాటిల్, ఆసి స్టెంట్ డైరెక్టర్ మానస్ కృష్ణకాంత్ మాట్లాడారు.



CSIR-NEERI

16th December, 2020

NEERI proposes 'Smart Tree' to improve air quality, Sakardara Garden likely to get one demo tree

■ The mist cooling system of this artificial tree can control the surrounding temperature to about 2-7 degrees Celsius

■ By Kaushik Bhattacharya

CSIR-National Environmental Engineering Research Institute (CSIR-NEERI) has also come forward and contributing to improve the air quality of the city by proposing its 'Smart Tree' which can be installed at traffic junctions. Maharashtra Pollution Control Board (MPCB) has prepared an action plan under the National Clean Air Programme (NCAP) for improvement of air quality of Nagpur till next year. MPCB took help of NEERI for framing the action plan and Nagpur Municipal Corporation (NMC) is the implementing authority.

NEERI has submitted a proposal of organic Light Tower inclusive of water sprinkler which is also called as 'Smart Tree' to the NMC.

(Contd on page 2)



NEERI's 'Smart Tree' that can reduce air pollution in city.

This 'Smart Tree' would have misting system that sprinkles water drops nearby areas.

Road construction, Maha Metro project and many other infrastructure development works are underway in the city. These construction works are generating huge amount of dust on daily basis. Along with industrial and traffic pollution, the dust is also the big reason of poor air quality.

Keeping this in mind, NEERI come up with 'Smart Tree', which can help to reduce dust particles on city roads.

"This artificial trees will have compartments to grow original plants which also can help to release oxygen. This Smart Tree will also have LED lights and also release mists," Dr Rita Dhodapkar, Senior Scientist, CSIR-NEERI told 'The Hitavada'. Sprinkling water in form of mist is a good option to settle down dust on city roads. This tree is look like very similar to a normal tree but its mist spraying technique makes it different. The mist cooling system can control the surrounding temperature to about

2-7 degree Celsius lower than the ambient temperature.

"We have proposed a demo 'Smart Tree' at Sakardara Garden to NMC. If they consider the proposal we can fit it there. If the tree receives good response in the garden then it can be used at traffic junctions in all over the city," said Dr Dhodapkar.

The 'Smart Tree' is an organic light tower consisting of metal framework covered with living plants enhance the landscaping features of an entrance of a traffic junction.

Money plant which is known for its air purifying properties and produces oxygen in the night too, can be used on this artificial tree. Apart from this, Variegated Tabernaemontana, Crasulacean plants and Orchids flowering plants also can be on this 'Smart Tree'.

The 'Smart Tree' can be developed to any size and shape depending on the location and requirement. It has controlled system of drip irrigation so that there is no wastage of water, said Dr Dhodapkar.

Published in:
The Hitavada

CSIR-NEERI

16th December, 2020

डॉ. राकेश कुमार यांना मानद अभ्यासवृत्ती

नागपूर : 'नीरी'चे संचालक
डॉ. राकेश
कुमार यांची
'इंटरनॅशनल
सोसायटी
फॉर एनर्जी
एनव्हायर्नमेंट
अॅण्ड



सस्टेनेबिलिटी'तर्फे मानद
अभ्यासवृत्तीसाठी निवड करण्यात
आली आहे. डॉ. कुमार हे मे
२०१६पासून नीरीचे संचालक
म्हणून काम बघत आहेत. पर्यावरण
अभियांत्रिकी संशोधन क्षेत्रातील
त्यांचे योगदान बघता, त्यांची या
अभ्यासवृत्तीसाठी निवड करण्यात
आली आहे.

Published in:

Maharashtra Times

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR_IND](#)



[CSIR India](#)